नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक
ISSN: 2349-4654
वर्ष : 14, अंक : 1, जनवरी 2026

जन-संगीत चेतना के संवाहक एवं सुरों के जादूगर : पंडित काशीनाथ बोडस

वृषाली द्विवेदी
शोधार्थी, दयानन्द गर्ल्स पी.जी. कालेज, कानपुर

प्रो. डॉ. रूचिमिता पाण्डे
संगीत विभाग (सितार), दयानन्द गर्ल्स पी.जी. कालेज, कानपुर

सार-संक्षेप

कानपुर नगर की सांगीतिक परंपरा में पंडित काशीनाथ बोडस एक प्रमुख एवं प्रतिष्ठित नाम हैं। ग्वालियर घराने की परंपरा में प्रशिक्षित बोडस जी ने शास्त्रीय संगीत को सरल, सहज और भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत कर उसे आम जनमानस से जोड़ने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। विशेष रूप से कानपुर में शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार में उनका योगदान उल्लेखनीय रहा है। भजनों के प्रति उन्हें विशेष लगाव था तथा वे पंडित कुमार गंधर्व की गायकी से अत्यंत प्रभावित थे। उन्होंने देश-विदेश में प्रस्तुतियाँ देकर भारतीय शास्त्रीय संगीत को व्यापक पहचान दिलाई। उनकी शिक्षण पद्धति भी विशिष्ट थी— वे बच्चों को रोचक कथाओं के माध्यम से शास्त्रीय संगीत का प्रशिक्षण देते थे। यह शोध ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक पद्धति पर आधारित है। अध्ययन हेतु साक्षात्कार, पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री, संबंधित वेबसाइटों तथा उपलब्ध साहित्य का उपयोग किया गया है। इस अध्ययन में बोडस जी के अनूठे व्यक्तित्व, गायकी एवं सांगीतिक योगदान पर प्रकाश डाला गया है।

मुख्य शब्द : वाग्गेयकार, निर्गुण,स्वरबद्ध, पद्धति, संवादात्मक

शोध-पत्र

आज के समय में जब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से कुछ ही क्षणों में संगीत तैयार किया जा सकता है, तब यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हम उस दौर में लौटें जब संगीत को एक साधना समझा जाता था न कि दो मिनट में बनने वाला कोई व्यंजन। उस समय संगीत तात्कालिक मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि वर्षों के अभ्यास, अनुशासन और कठिन तपस्या का परिणाम होता था।

यही विचार इस शोध का आधार बने। संगीत के बदलते स्वरूप और उसकी पारंपरिक जड़ों को समझने के उद्देश्य से मैंने अपने नगर कानपुर के अनेक प्रतिष्ठित संगीतज्ञों से संवाद किया। अनेक कलाकारों ने विशेष रूप से पंडित काशीनाथ बोडस जी का नाम उल्लेखित किया। उनके जीवन और योगदान का अध्ययन करते हुए यह स्पष्ट हुआ कि काशीनाथ बोडस जी के पिता श्री शंकर श्रीपाद बोडस महाराष्ट्र से केवल संगीत के प्रति अपने गहरे समर्पण और जुनून के कारण कानपुर जैसे शहर में आये जो एक औद्योगिक नगरी के रूप में प्रसिद्ध है और जहाँ प्रारंभिक दौर में शास्त्रीय संगीत को लेकर ना के बराबर जागरूकता थी।

उस दौर में कानपुर के लोगों की मानसिकता संकीर्ण थी। लोगों के मन में आमतौर पर ये पूर्वाग्रह था कि एक संस्कारी और सभ्य समाज के बच्चों को गाना - बजाना नहीं करना चाहिए। अगर कोई बच्चा संगीत सीखने में रुचि दिखाता था तो आमतौर पर परिवारों में अनुमति नहीं मिलती थी।

महाराष्ट्र से कानपुर का सफर

सन 1924 में कानपुर के पीपीएन कॉलेज के मैदान में श्रीमती सरोजिनी नायडू की अध्यक्षता में कांग्रेस पार्टी के अधिवेशन के दौरान महात्मा गांधी को सुनने के लिए भीड़ उमड़ पड़ी थी तथा कुछ उग्र होने लगी थी। ऐसे में भीड़ को शांत करने के लिए आयोजकों ने तय समय से पहले ही संगीत कार्यक्रम शुरू करा दिया। ग्वालियर घराने के प्रसिद्ध संगीतज्ञ विष्णु दिगंबर पलुस्कर जी अपने शिष्यों के साथ मंच पर आए। उनका संगीत–रागों पर आधारित भजन और राष्ट्रभक्ति गीत—इतना मधुर और मन मोह लेने वाला था कि लोगों को यह तक पता नहीं चला कि गांधी जी मंच पर आ चुके हैं। कॉलेज के प्राचार्य इस प्रस्तुति से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने पलुस्कर जी से अनुरोध किया कि क्या वे अपने किसी शिष्य को कॉलेज में संगीत सिखाने के लिए भेज सकते हैं? प्राचार्य का कहना था कि इस औद्योगिक नगरी में शास्त्रीय संगीत के अनुकूल वातावरण नहीं है। पलुस्कर जी के साथ श्री शंकर श्रीपाद बोडस जी भी उस कार्यक्रम के दौरान पहली बार कानपुर आये। पी.पी.एन. कॉलेज के प्रधानाचार्य ने पं. पलुस्कर जी से अपने स्कूल में संगीत शिक्षा प्रारम्भ करने की दृष्टि से एक शिष्य देने को कहा और तब 1925 ई0 से श्री शंकर श्रीपाद बोडस जी वहाँ पर संगीत शिक्षा देने के लिये पलुस्कर जी द्वारा भेजे गये। (बांगरे 394) कानपुर जैसे औद्योगिक शहर में संगीत को सभी सद्वृत्तियों से जोड़कर उसको आगे बढ़ाने का काम सबसे पहले काशीनाथ जी के पिता श्री शंकर श्रीपद बोडस जी ने किया। अपने गुरु एवं पिता के आदेश का पालन करते हुए पंडित काशीनाथ बोडस जी ने भी कानपुर नगर में संगीत के प्रति लोगों की श्रद्धा बढ़ाने का कार्य पूर्ण निष्ठा से किया।

प्रारंभिक जीवन एवं व्यक्तित्व के अनूठे आयाम

पंडित काशीनाथ बोडस जी का जन्म 4 दिसंबर 1935 को हुआ। उनके पिताश्री श्री शंकर श्रीपाद बोडस स्वयं एक सिद्धहस्त संगीतज्ञ थे, जिनसे उन्हें प्रारंभिक संगीत संस्कार प्राप्त हुए। उनकी बहन विदुषी वीणा सहस्रबुद्धे भी एक प्रख्यात गायिका थीं।

काशीनाथ बोडस जी को सभी स्नेहपूर्वक 'तात्या' कहकर पुकारते थे। उनकी प्रारंभिक संगीत शिक्षा उनके पिताश्री श्री शंकर श्रीपाद बोडस से हुई। तत्पश्चात उन्होंने पंडित डी. वी. पलुस्कर जी से कुछ समय तक संगीत सीखा तथा बाद में पंडित कुमार गंधर्व जी से वे अत्यंत प्रभावित हुए तथा लंबे समय तक उनके सान्निध्य में रहकर संगीत के सूक्ष्म पक्षों को आत्मसात किया।

उनके व्यक्तित्व में ऐसे अनेक गुण थे, जिन्हें जानना किसी भी सच्चे संगीत साधक के लिए अत्यंत आवश्यक है। उनका मानना था कि संगीत के क्षेत्र में भीतर और बाहर—दोनों प्रकार की शुद्धता अत्यंत आवश्यक है। वे कहा करते थे कि "संगीत ने हमें चुना है; यह हमारा आनंद और हमारी उपलब्धि है कि हमें मंच पर बैठकर सुना जा रहा है—बस इतना ही पर्याप्त है।" (वीणा पाणि शुक्ला) संगीत का संस्कार व्यक्ति में अपनी रफ़्तार से स्वाभाविक रूप से विकसित होता है,उसे थोपा नहीं जा सकता। इसे समझते हुए वे अपने शिष्यों को बिना किसी रोष प्रकट किये अत्यंत प्रेमपूर्वक और सहज भाव से सिखाते थे।

प्रचार से अधिक साधना को वरीयता

उनका झुकाव सदैव कला के प्रति अधिक रहा, न कि अपनी कला के प्रचार-प्रसार की ओर। वे वास्तविक अर्थों में एक सच्चे संगीतज्ञ थे। उनकी सबसे बड़ी विशेषता उनका सुरीलापन था। वे बेहद मीठा स्वर लगाते थे, जो श्रोता कुछ दिनों तक निरंतर उन्हें सुन लेता,उसके मन में संगीत के प्रति स्वाभाविक रूप से रुचि उत्पन्न हो जाती थी।(रचना बोडस)

लय और स्वर के सामंजस्य को अत्यंत सहजता से स्वरों में पिरो देना उनकी विशिष्ट कला थी। यमन उनका अति प्रिय राग था और झूमरा उनकी अत्यंत प्रिय ताल थी, जिसमें उन्होंने अनेक रचनाएँ प्रस्तुत कीं।तानपुरे को वे अत्यंत शुद्ध और सटीक ढंग से साधते थे, जो उनके संगीत-साधना के प्रति गंभीर और अनुशासित दृष्टिकोण को दर्शाता है। (प्रशांत बोडस)

काशीनाथ बोडस जी की गायन शैली

बहुत साफ सुरीली और सच्ची गायकी थी उनकी। स्वरों का सटीक लगाव, भाव, सुरीलापन तथा मधुर गायन था। बहुत क्लिष्ट गायकी का प्रदर्शन करने में वे यकीन नहीं करते थे। एकदम सरल, सुमधुर, राग की अच्छी बढ़त, तथा आकार और भावपक्ष बहुत प्रबल था। जो भी उन्हें सुन लेता था मोहित हो जाता था। शास्त्रीय और भजन दोनों में ही माहिर थे। (आस्था शुक्ला) पुणे के डॉ0 हरि सहस्त्रबुद्धे जी बताते हैं कि वे ग्वालियर घराने से ताल्लुक रखते थे तो उसी शैली को अपनाया परंतु वह नए प्रयोग के पक्षधारी थे। ग्वालियर घराने की जो पारंपरिक गायकी है उसमें विलंबित की लय काफ़ी चढ़ी हुई (तेज लय) होती है। उस परंपरा के गायक प्रायः उसी लय में गाते हैं। स्वयं काशीनाथ बोडस जी के पिताजी श्री शंकर श्रीपाद बोडस जी भी उसी लय में गाते थे लेकिन तात्या ने थोड़ी और विलंबित लय में गाने का प्रयास किया। यह इतना आसान नहीं है क्योंकि एक बंदिश का ढांचा लय के अनुरूप ही बना हुआ होता है। उसके बल - पेंच लय के अनुरूप ही तय होते हैं तथा उसी लय में खिलने वाले होते हैं। लय कम करने पर संपूर्ण ढाँचे को बदलना पड़ता है।

संगीत के विषय में उनका कहना था कि पहले आप अपने आपसे तो संतुष्ट हों। वरना आपमें हिम्मत कहीं से आएगी। काशीनाथ जी की यही बात उनको ईश्वर से जोड़ देती थी क्योंकि वह आत्मा से निकला हुआ स्वर था। वे चलते–फिरते ही धुनें बना देते थे।

उद्योग नगरी कानपुर के मिज़ाज को बनाया सुरीला

उस समय कानपुर जैसे शहर में संगीत के प्रति किसी का कान ही नहीं था तथा तथा संगीत की समझ कीर्तन आदि तक ही सीमित थी।

उस वक्त के जो बड़े घरानेदार गायक थे वे भी गायन के नाम पर कलात्मकता और तानों की कलाकारी पर अधिक ध्यान देते थे। लोगों को भी लगने लगा कि शास्त्रीय गायन शायद ऐसा ही होता है और उसके प्रति आम जनता की अनिच्छा होने लगी थी। शास्त्रीय संगीत एक खास वर्ग विशेष तक ही सीमित था तथा लोग ज़्यादा शास्त्रीय गायन सुनने नहीं जाते थे। बोडस जी ने इस बात को समझा तथा सुरीला और सरल संगीत भजनों के माध्यम से लोगों तक पहुँचाने का कार्य किया। वे घर-घर जाकर भजन सुनाते थे और बच्चों को संगीत सीखने के लिए प्रेरित करते थे। वे महिला डिग्री कॉलेज में संगीत शिक्षक थे। कक्षाओं में भी बच्चों को भजन सिखाये जाते थे।संगीत के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से उन्होंने भजनों को अपनाया था।

संगीत से जुड़ा हुआ उनका उद्देश्य सिर्फ तान-आलाप करना नहीं था बल्कि संगीत से लोगों को जोड़ना था, देशभक्ति तथा अध्यात्म से लोगों को जोड़ना था।

ऐसा होता है कि आपके दिल में कोई भावना है और आप उसको चार लोगों के साथ मिलकर गाने लगते हैं तो वो भावना और ज्यादा मजबूत हो जाती है और सुनने वाले भी उससे उत्साहित होते हैं। किसी एक व्यक्ति के गाने से वो असर नहीं पैदा होगा जो एक समूह में गाने से होगा। बोडस जी ने इसी को आगे बढ़ाया और उनके ये कार्यक्रम काफी समय तक चले और लोकप्रिय भी हुए। किसी भी सुन्दर भजन को अच्छे कवियों से लिखवाकर, उसकी धुन स्वयं बनाते थे तथा बच्चों को समूह में गवाते थे। लगभग एक घंटे का समूहगान कार्यक्रम चलता था और अंत में लय काफी बढाकर एक आवाज़ में जब स्वर गूँजते थे तो इससे गज़ब का आकर्षण पैदा होता था। फिर पूरी जनता भी उसमें भिड़कर गाती थी। स्वतंत्रता संग्राम, देशभक्ति गीत, भजन आदि के समूहगान की उनकी शैली अत्यंत कारगर रही।(वीणा पाणि शुक्ला) वे रहीम, मीरा, कबीर आदि के भजनों को स्वरबद्ध करके गाते थे। कोई भी भजन स्वरबद्ध करने में उनको दस मिनट से ज़्यादा का समय नहीं लगता था। वे एक उत्तम वाग्गेयकार थे। चूंकि वे कुमार गन्धर्व जी की गायकी से प्रभावित थे तो उनके निर्गुण भजनों में कुमार गन्धर्व जी की गायकी की छाया दिखती थी।

"सागर मेरे गीत जगाए, चाँद जलाए बाती" ये गीत उन्होंने स्वरबद्ध किया जो बहुत लोकप्रिय हुआ। शब्द किसी भी भक्त कवि के हों तात्या उन्हें अपने तरीके स्वरबद्ध से करते थे। उनकी बुद्धि सुरों और रचनाओं के मामले में बहुत प्रखर थी। वे गद्यात्मक पदों को भी बड़ी सरलता से स्वरबद्ध कर देते थे। उनका मानना था कि भजन गाते समय उच्चारण सटीक होना चाहिए, अर्थ समझना चाहिए और फिर भजन के भाव को समझते हुए उसी अनुसार स्वरबद्ध करना चाहिए। (संदीप बोडस)

उन्होंने संगीत सिखाने का काम खूब किया। जिसके अंदर संगीत सीखने की लगन, चाव और योग्यता हो, वो उसे तुरंत भाँप लेते थे। ऐसे लोगों के पास समय से पहुँचकर निष्ठा से सिखाना वह अपना कर्त्तव्य समझते थे फिर वो चाहे गरीब हो, किसी गली-कूचे में रहता हो, बिना किसी शुल्क सिखाते थे। वे बच्चों को खेल-खेल में, ताल पर उछलते-कूदते हुए संगीत सिखाते थे। स्वरों का परिचय वे मानो मानवीय पात्रों के रूप में कराते थे। एक विवरण में उल्लेख मिलता है कि वे बच्चों को कोमल और शुद्ध स्वरों का अंतर समझाने के लिए रोचक उदाहरण देते थे। कोमल स्वर को वे उस छात्र के रूप में प्रस्तुत करते थे जो सदैव देर से आता है और चुपके से पीछे की ओर से कक्षा में प्रवेश करता है, जबकि शुद्ध स्वर आत्मविश्वास से भरा हुआ, समय पर आकर सामने बैठा रहता है। एक प्रायः अपना ज्योमेट्री -बॉक्स लाना भूल जाता है, जबकि दूसरे के पास पूरा सामान सुसज्जित रहता है। ऐसी रोचक और प्रभावी शिक्षण-पद्धतियाँ उन्होंने अपने पिता, श्री शंकर श्रीपाद बोडस से सीखी थीं।(नायर) उनके पिता स्वयं एक सिद्धहस्त संगीतज्ञ थे और बाल-मन के अनुरूप संगीत को सरल एवं रोचक बनाने की कला में निपुण थे। यही कारण है कि पंडित काशीनाथ बोडस ने भी शिक्षण को केवल तकनीकी अभ्यास तक सीमित न रखकर उसे अनुभवात्मक, संवादात्मक और आनंदमय बनाया।

अपने पिताजी की स्मृति में उन्होंने 'नादवर्धन' संस्था की स्थापना की जिसमें देश के तमाम गुणी कलाकारों को वह प्रतिवर्ष कानपुर शहर में कार्यक्रम हेतु आमंत्रित करते थे।

बोडस जी भजनों के लिए बहुत प्रचलित थे। छोटे से छोटे भजन में पूरे राग का विस्तार करके उसका चित्र सामने खड़ा कर देते थे। वे एक उत्तम वाग्गेयकार थे। उन्होंने शास्त्रीय संगीत में भी रचनाएं की तथा भजनों में भी उन्होंने बहुत लोकप्रियता हासिल की।

काशीनाथ बोडस जी द्वारा रचित कुछ बंदिशों की सूची–

क्र.	राग	बोल	ताल
1	भैरव	सरगम गीत	रूपक
		शंकर गिरिजापति	द्रुत एकताल
2	अहीर भैरव	आई बसंत की ऋतु	मध्य तीनताल
3	नट भैरव	शंकर शरण तोरे	विलम्बित एकताल
		गुनीजन बखाने	मध्य त्रिताल
4	भैरवी	सरगम	द्रुत एकताल
5	भटियार	माता महाकाली	द्रुत एकताल
6	देशकार	तराना	त्रिताल
7	गुर्जरी तोड़ी	तराना	त्रिताल
8	धानी	आनंद मनाओ आज	विलम्बित रूपक
		अब घर आयो	त्रिताल
9	अंबिका	ए मातु अंबिके	विलम्बित एकताल
		जय कालिके	त्रिताल
		तराना	द्रुत आड़ाचारताल
		तराना	द्रुत आड़ाचारताल

10	मेघ मल्हार	बरखा ऋतु आई	विलम्बित एकताल
		गरज घटा घनघोर	द्रुत एकताल
11	मियाँ मल्हार	तराना	द्रुत एकताल
12	दुर्गा	अंबे दुर्गे दयानिधे	त्रिताल
13	बसंत	मधुकर आज बसंत बधाई	त्रिताल
14	तिलक कामोद	तराना	द्रुत एकताल
15	कामोद	जब से लागी लगन	त्रिताल
16	हंसध्वनि	ब्रह्मा शिव हरि	त्रिताल
		जब से लागी लगन	त्रिताल
17	रागेश्री	तराना	त्रिताल
18	मधुकौंस	आवो सजना आवो	विलम्बित त्रिताल
		आ जाओ श्याम खेलो ना होरी	त्रिताल
19	मालकौंस	मंगल मूरत मारुत नंदन	मध्य त्रिताल
		दुर्गे भवानी	द्रुत एकताल
20	जोगकौंस	तराना	त्रिताल

(सहस्त्रबुद्धे 119-122)

उनके द्वारा रचित कुछ भजनों की सूची इस प्रकार है–

1. घट–घट में पंछी बोलता (भटियार)
2. कर ले सिंगार चतुर अलबेली (अहीर भैरव)

पं. काशीनाथ बोडस अपनी बहन विदुषी वीणा सहस्त्रबुद्धे के साथ

3. सब कुछ जीवित हो व्यवहार (बैरागी)
4. करो मन राम नाम रसपान (भीमपलासी)
5. मोरी रंगी चुनरिया (भैरवी)
6. मन लागो यार फकीरी में (भैरवी)
7. जाके प्रिय ना राम वैदेही (तोड़ी)
8. बैठे हैं राम लखन अरु सीता (यमन)
9. रसना राम कहत ते थाको (जौनपुरी) (बाजपई)

संगीत के क्षेत्र में सम्मान

1. 1978 में 'सुरमणि' की उपाधि से अलंकृत किया गया।
2. 1981 में आकाशवाणी के 'ए-ग्रेड' कलाकार के रूप में चयन हुआ।
3. 1990 में उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी की ओर से सम्मान प्राप्त हुआ। (धनेश्वर 19)

देश–विदेश में काशीनाथ बोडस जी के कार्यक्रम

काशीनाथ बोडस जी का 1956 में पहली बार रेडियो से कार्यक्रम प्रसारित हुआ तथा उसके पश्चात उन्होंने लगातार रेडियो में प्रस्तुतियाँ दी। 1978 से लखनऊ दूरदर्शन पर व 1982 से नेशनल नेटवर्क पर उनके कार्यक्रम हुए।

- विष्णु दिगम्बर जयंती समारोह (दिल्ली)
- तानसेन समारोह (ग्वालियर)
- बद्री–केदार उत्सव (उत्तराखंड)
- मल्हार उत्सव (मुंबई)
- राष्ट्रपति भवन (दिल्ली)
- गन्धर्व महाविद्यालय मंडल, त्रैवार्षिक सम्मेलन, पुणे (1982)
- एम्स्टर्डम (नीदरलैंड) – वहाँ की रानी के पैलेस में क्वीन के समक्ष गायन हुआ जिसमें तत्कालीन राष्ट्रपति श्री वेंकटरमन जी भी उपस्थिति थे।
- आई.सी.सी.आर. की तरफ से अफगानिस्तान में (1988)
- यू.एस.ए. और कनाडा में लगभ 10 कार्यक्रम किये।
- यूरोप (धनेश्वर 19)

देश–विदेश में उन्होंने अनेक योग्य शिष्यों को तैयार किया। उनके प्रमुख शिष्यों के नाम इस प्रकार हैंः– डा0 वीणा पाणि शुक्ला, डा0 विजया रामचंद्रन, डा0 सुषमा बाजपेयी, विनोद कुमार द्विवेदी, रचना बोडस, रंजनी रामचंद्रन, बासवी मुखर्जी, श्रीमती आस्था शुक्ला, अंजना भट्टाचार्य। (श्रीवास्तव)

अपने एक कार्यक्रम के चलते वे कनाडा गए हुए थे जहाँ उन्होंने चिन्मय मिशन के आश्रम में भजन प्रस्तुतियाँ दीं। उसी दौरान 20 जुलाई 1995 को दिल का दौरा पड़ने से उनका निधन हो गया।

निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पंडित काशीनाथ शंकर बोडस का सांगीतिक दृष्टिकोण इस विचार पर आधारित था कि केवल कठिन या जटिल संगीत ही श्रेष्ठ संगीत नहीं होता। उनके अनुसार संगीत की वास्तविक उत्कृष्टता उसकी भावपूर्ण प्रस्तुति, राग की शुद्धता और श्रोता के साथ स्थापित होने वाले आत्मीय संबंध में निहित है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि शास्त्रीय संगीत को सरल, रुचिकर और संवादात्मक रूप में प्रस्तुत कर उसे अधिक व्यापक श्रोता-वर्ग तक पहुँचाया जा सकता है।

कानपुर जैसे नगर में उन्होंने समूहगान, भजन, देश भक्ति गीत तथा विविध सांगीतिक कार्यक्रमों के माध्यम से शास्त्रीय संगीत को सामाजिक जीवन से जोड़ा। संगीत को केवल मंचीय प्रदर्शन तक सीमित न रखकर उन्होंने उसे जन-जन से जोड़ने का माध्यम बनाया। देश-विदेश में प्रस्तुतियों के माध्यम से उन्होंने भारतीय शास्त्रीय संगीत की गरिमा का प्रसार किया तथा अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की।

विशेष रूप से उनकी शिक्षण-पद्धति उल्लेखनीय रही। उन्होंने रोचक कथाओं और उदाहरणों के माध्यम से बच्चों को शास्त्रीय संगीत सिखाने का कार्य किया, जिससे संगीत शिक्षा सरल एवं आकर्षक बन सकी। यह दृष्टिकोण उनके संवेदनशील गुरु-स्वभाव और समाजोन्मुख सोच को दर्शाता है।

अतः यह निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पंडित काशीनाथ शंकर बोडस का कृतित्व इस तथ्य का प्रमाण है कि परंपरा और नवीनता का संतुलित समन्वय ही शास्त्रीय संगीत को जीवंत और प्रासंगिक बनाए रखता है। उनका योगदान न केवल गायकी तक सीमित रहा, बल्कि संगीत को संस्कार, संवाद और सामाजिक एकता का माध्यम बनाने में भी महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बांगरे, अरुण, ग्वालियर की संगीत परंपरा, कनिष्क पब्लिशर्स, 1995,पृ. 394
2. शुक्ला, वीणा पाणी,साक्षात्कार द्वारा : वृषाली द्विवेदी, 13 मार्च 2024, पुणे, महाराष्ट्र।
3. बोडस, रचना, साक्षात्कार द्वारा : वृषाली द्विवेदी,4 जुलाई 2025, कानपुर, उत्तर प्रदेश।
4. बोडस, प्रशांत, साक्षात्कार द्वारा : वृषाली द्विवेदी,17 नवम्बर 2024, कानपुर, उत्तर प्रदेश।
5. शुक्ला, आस्था, साक्षात्कार द्वारा : वृषाली द्विवेदी,7 फरवरी 2024, कानपुर, उत्तर प्रदेश।
6. शुक्ला, वीणा पाणी, साक्षात्कार द्वारा : वृषाली द्विवेदी,13 मार्च 2024, पुणे, महाराष्ट्र।
7. बोडस, संदीप, साक्षात्कार द्वारा : वृषाली द्विवेदी,4 जुलाई 2025, कानपुर, उत्तर
8. Malini Nair. "The story of how one family from Maharashtra built a thriving Hindustani music scene in Kanpur." scroll.in, 11 January 2025. https://scroll.in/magazine/1077752/the-story-of-how-one-family-from-maharashtra-built-a-thriving-hindustani-music-scene-in-kanpur
9. सहस्त्रबुद्धे, वीणा. नाद–निनाद. अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडल, 2000, पृ. 119-122
10. बाजपेयी, सुष्मा, साक्षात्कार द्वारा : वृषाली द्विवेदी, 10 सितम्बर 2024, कानपुर, उत्तर प्रदेश।
11. धनेश्वर, सरिता, "काशीनाथ बोडस जी से एक मुलाक़ात" संगीत कलाविहार, अखिल भारतीय गन्धर्व महाविद्यालय मंडल प्रकाशन,1992, पृ. 19
12. वही
13. श्रीवास्तव, अरविंद, साक्षात्कार द्वारा : वृषाली द्विवेदी,14 सितम्बर 2024, कानपुर, उत्तर प्रदेश।
14. सहस्त्रबुद्धे, हरि, साक्षात्कार द्वारा : वृषाली द्विवेदी, 14 मार्च 2024, पुणे, महाराष्ट्र।